JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मैथिल ब्राह्मणोत्पत्तिः।

– रोहित कुमार चौधरी,
ग्राम–चहुँटा, पो०–कमतौल, जिला–मधुबनी

गण्डकीतीरमारभ्य चम्पाण्यान्तकं शिवे।

विदेहभूः समाख्याता तैरभक्तामिधः सतु।।

गण्डकी के किनार सऽ पूर्व चम्पारण्य के अन्त तक विदेह भूमि कहल जाइत अछि, आ एकरा अय समय में तिर्हूत कहल जाइत अछि, इच्छवाकु के दूटा पुत्र विकुच्छित के आ निमि, निमि वंश के वृत्तान्त एहन अछि कि निमि, महर्षि गौतम ऋषिक आश्रमक लऽ में जयन्त नामक नगर बसेला आ हुनके वंश में राजा जनक भेलैथि, निमि एगो भव्य यज्ञ के आयेाजन केलैथि आ वसिष्ठजी के प्रोहित्य के हेतु आमन्त्रित केलैथि किन्तु वसिष्ठजी ओय समय में इेवराज इंद्र के यज्ञ में संलग्न छलैथि।

अतः वसिष्ठजी आवा में असमर्थ छलैथि आ निमि महर्षि गौतम आ अन्य ऋषिगण के सहायता स अपन यज्ञ आरम्भ करेलैथि आ जखन वसिष्ठजी के ईबात के जानकारी भेलैनि त तुरन्त निमि के श्राप दऽ देलखिन्नि, मुदा प्रतियुत्तर मे निमि सेहो वसिष्ठजी के शाप दऽ देलखिन्नि। आ अय वजहः स दुनु जैड़िक भस्म भऽ गेलैथि, मुदा सब ऋषिगण मिल कऽ एगो उपचार सऽ यज्ञ समाप्ति तक निमि के शरीर सुरक्षित रखलैथि, निमि के कोनो सन्तान नइ छलैनि। अतः सब ऋषिगण मिल कऽ अरणि सऽ हुनकर शरीर के मन्थन केलैथि, जाय स हुनकर एगो पुत्र उत्पन्न भेलैन, शरीर मन्थन सऽ उत्पन्न हेवाक कारण हिन्कर नाम मिथि परलैनि, आ मृतदेह सऽ उत्पन्न हेवाक कारण (जनक विदेह) सेहो कहेलथि (जेना कहल जाएत अछि)।

राजाऽभूत्रषु लोकेषु विश्रुतः स्वेन कर्मणा।

निमिः परमधर्मात्मा सर्वसत्तक्व तांवरः।।

(वाल्मीकि रामाण वालकाण्ड ७१–३)

अपन सुकर्म द्वारा तीनू लोक में प्रसिद्ध धर्मात्मा सत्वादी आ सब राजा में श्रेष्ठ मिथि नाम के एगो राजा भेलैथि।

तस्य पुत्रो मिथिरनाम प्रथमो मिथिपुत्रकः।

प्रथमाज्जनको राजा जनकादप्युदाबसुः।।

निमि के पुत्र मिथि भेलैनि आ मिथि के पुत्र जनक भेलैनि, यैह जनक के नाम सऽ इ वंशके सब राजा जनक कहवा रहल छैथि।

अरण्यां मथ्यमानायां प्रादुर्भतो महायशाः।

नाम्ना मिथिरिति ख्यातो जननाज्जनकोऽभवत्।

राजासौ जनको नाम विख्यातो भारतेऽखिले।। (वायुपु.खं.2अ.२७.)

अरणी सऽ शरीर के मथलाऽ सऽ मिथि नामक पुरूष के जन्म लेलैन, जन्म हेवाक सऽ जनक कहलैन आ नाम सऽ मिथिलापुरी बसेलैन, राजा जनकके अश्वमेध यज्ञ में सहस्रों ऋषि सबके समागम लेलैन आ ओय समय में शास्त्रार्थ में याावल्क्यजी सब ऋषि सऽ श्रेष्ठ समझल गेलैथ आ याज्ञवल्क्यजी के शिष्य अनेकों गाम के लोक मिथिला देशमें निवास करऽ लगलैथ।

ते सर्वे मैथिला जातः स्वाध्यायव्रतशालिनः।

आ मैथिल देश्मे निवास करवाक कारण ओ सब ब्राह्मण मैथिल कहेलैन आ मैथिल ब्राह्मण अखनो तक बड़ा विद्वान आ शास्त्राज्ञाता होयतऽ छैथि।